अनुवाद

हे अर्जुन! जो कुछ भी चर-अचर दिखता है, उस सब को तू क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के संयोग से उत्पन्न जान।।२७।।

तात्पर्य

इस श्लोक में प्रकृति और जीवात्मा दोनों के तत्त्व का वर्णन है। ये दोनों सृष्टि से पूर्व भी थे। जो कुछ सृष्टि होती है, वह प्रकृति और जीवात्मा के संयोग से ही होती है। सृष्टि में वृक्ष, पर्वत आदि अनेक अचर पदार्थ हैं और अनेक चर पदार्थ भी हैं। इन सभी की रचना अपरा प्रकृति और जीवरूप परा प्रकृति के संयोग से हुई है। जीवरूप परा प्रकृति के स्पर्श के बिना किसी वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती। अतएव अपरा प्रकृति और परा प्रकृति का सम्बन्ध नित्य चला आ रहा है। यह संयोग स्वयं श्रीभगवान् कराते हैं। अस्तु, वे परा और अपरा—दोनों प्रकृतियों के ईश्वर (स्वामी) हैं। अपरा प्रकृति का सृजन करके वे परा प्रकृति को इसमें स्थापित करते हैं। इसी से सम्पूर्ण क्रियाओं और वस्तुओं की अभिव्यक्ति होती है।

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।।२८।।

समम्=समभाव से; **सर्वेषु**=सब; **भूतेषु**=प्राणियों में; **तिष्ठन्तम्**=स्थित; **परमेश्वरम्**=परमात्मा को; **विनश्यत्सु**=नाशवान्; **अविनश्यन्तम्**=नाशरहित; **यः**=जो; **पश्यति**=देखता है; **सः**=वही; **पश्यति**=यथार्थ देखता है।

अनुवाद

जो सब देहों में जीवात्मा के साथ परमात्मा को भी देखता है और जो यह जानता है कि चराचर भूतों का नाश होने पर भी जीवात्मा और परमात्मा का कभी नाश नहीं होता, वही वास्तव में देखता है।।२८।।

तात्पर्य

जो पुरुष सत्संग के द्वारा देह, देही जीवात्मा और जीवात्मा के सखा (परमात्मा) का तत्त्व जान जाता है, वह सच्चा ज्ञानी है। जीव के सखा को न जानने वाले वस्तुतः अज्ञानी हैं। वे केवल देह को ही देखते हैं और देह का नाश होने पर समझते हैं कि सब कुछ नष्ट हो गया। परन्तु यथार्थ वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। देह का नाश हो जाने पर भी जीवात्मा और परमात्मा का अस्तित्त्व अविकृत रहता है, वे नित्य-निरन्तर विविध चराचर योनियाँ धारण करते रहते हैं। **परमेश्वरम्** शब्द को कभी-कभी जीवात्मा का वाचक मान लिया जाता है, क्योंकि जीवात्मा देह का स्वामी है और देह का नाश होने पर देहान्तर करता है। इस दृष्टि से वह भी ईश्वर है। किन्तु परम्परागत आचार्यों के अनुसार **परमेश्वर** पद परमात्मा का वाचक है। दोनों दृष्टियों से परमात्मा और जीवात्मा नित्य बने रहते हैं; उनका नाश कभी नहीं होता। जो ऐसा देखता है, वही तत्त्वदर्शी है।